शुतुरमुर्ग इतना बेवकूफ नहीं है

नरेन्द्र देवांगन

अगर आप सचमुच सोचते हैं कि ज़मीन से ऊपर उड़ सकने में असमर्थ शुतुरमुर्ग बेवकूफ-सा दिखने वाला एक पक्षी भर है तो आप गलत हैं। पूरी रफ्तार से भागते समय शुतुरमुर्ग 3-3 मीटर लंबे डग भरता है। ऐसे मौकों पर इसकी रफ्तार तकरीबन 70 किलोमीटर प्रति घंटे की होती है जो ज़मीन पर भागने में सिर्फ चीते से कम है। 35 किलोमीटर प्रति घंटे की सुस्थिर गति से वह लगातार 10 घंटे तक दौड़ सकता है।

उसकी नज़र इतनी तेज़ होती है कि शत्रु को काफी दूर से ही ताड़ लेता है और किसी खतरे को सूंघते ही रफूचक्कर हो जाता है। खतरे से सामना होने पर वह अपने पैरों से हथौड़े जैसी चोट करके आक्रमणकारी की आंतों को उतनी ही आसानी से बाहर खींच निकालता है जितनी आसानी से कोई कटार। केन्या में एक शुतुरमुर्ग अपने चूज़ों को बचाने के लिए एक शेरनी से भिड़ गया। उसके आक्रमण से घबरा कर शेरनी को भागना पड़ा।

रोमन प्रकृतिविद प्लिनी के अनुसार खतरे के सामने शुतुरमुर्ग बालू में सिर छिपा लेता है। लेकिन यह सच नहीं है। दरअसल, वह धोखा देने में उस्ताद होता है। सिर और गर्दन ज़मीन से बिलकुल सटाकर वह अपने शरीर को गेंद की तरह गोल बना लेता है। यह स्थिति किसी झाड़ी, चट्टान या चींटियों की बांबी का भ्रम पैदा करती है। दिन में मादा शुतुरमुर्ग अंडों के ऊपर बैठती है। उसका धूसर रंग आसपास की चीज़ों से मिल जाता है। काले पंखों वाला उसका साथी नर शुतुरमुर्ग रात को उसकी जगह ले लेता है।

उड़ने में असमर्थ शुतुरमुर्ग भले ही एक अजीब-सा पक्षी हो, लेकिन उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। अपने आपको परिस्थितियों के अनुकूल ढालते रहने के लिए शुतुरमुर्ग 8 करोड़ वर्षों से भी अधिक समय से मटर के दाने जैसे अपने तेज़ तर्रार मस्तिष्क का उपयोग करता रहा है। और आज शुतुरमुर्ग अफ्रीकी वन प्रदेश के उन चंद प्राणियों में से एक है जिसका अस्तित्व खतरे में नहीं है। पंखों से भरे इस चलते-फिरते झाड़न की अक्खड़ चाल और शानदार पूंछ के साथ एक पनपता उद्योग भी जुड़ा है।

किसी ज़माने में शुतुरमुर्गों के विशाल झुंड अफ्रीका, फारस की खाड़ी और उत्तरी भारत में विचरण किया करते थे। मिस्रवासी इनके पंखों को सत्य और न्याय का प्रतीक मानकर इनकी पूजा करते थे और केवल फरोआ को ही इनके बड़े पंखों को सिर पर धारण करने का अधिकार प्राप्त होता था।

कई वर्षों तक शुतुरमुर्गों को उनके पंखों के लिए मारा जाता रहा। फिर 19वीं शताब्दी के मध्य में दक्षिण अफ्रीका के कुछ किसानों ने इन्हें पालना शुरू किया। बहुत से लोगों ने उन किसानों को शुतुरमुर्ग जैसा ही मूर्ख समझा, लेकिन शीघ्र ही यह सिद्ध हो गया कि वे कितने चतुर थे।

तकरीबन 120 किलो वज़न वाला शुतुरमुर्ग पृथ्वी का सबसे बड़ा पक्षी है। इसकी ऊंचाई 2 मीटर से अधिक होती है, जिसमें आधी ऊंचाई तो सिर्फ सिर और पतली गर्दन की

वजह से होती है। शुतुरमुर्ग के कुल वज़न में से उसके पंखों का भार बस एक से दो किलो के आसपास होता है। एक शुतुरमुर्ग दिन भर में 5 से 10 किलोग्राम तक चारा चट कर जाता है। वह चारे में मिले कंकड़ भी निगल लेता है। ये उसके पेट की थैली में चारे की पिसाई में मदद करते हैं। वह हर ऐसी चीज़ को भी खा जाता है जिसमें थोड़ी भी चमक हो। दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका में एक बार एक शुतुरमुर्ग के पेट से 53 हीरे निकले। फिर तो काफी बड़े पैमाने पर शुतुरमुर्गों का संहार शुरू हो गया।

शुतुरमुर्ग पालन में अंडे सेने वाले प्रत्येक जोड़े के लिए एक सीधा-सादा अंग्रेजी के ए अक्षर जैसा छप्पर बनाया जाता है। इसके अंदर मिट्टी खोद कर गड्ढा बना दिया जाता है। गड्ढे में डाले गए अंडों का रंग मक्खनी और व्यास 15 सेंटीमीटर होता है।

लगभग एक दर्जन अंडे दे चुकने के बाद मादा शुतुरमुर्ग अंडे देना बंद करके उन्हें सेना शुरू कर देती है। और तब लोग इन्हें ठगना शुरू कर देते हैं। मादा शुतुरमुर्ग हर दूसरे दिन अंडे देती है। ज़्यादा चूज़े पाने के लिए लोग बीच-बीच में एक अंडा हटा लेते हैं और उसे इनक्यूबेटर में कृत्रिम रूप से सेते हैं। इनक्यूबेटर का तापमान बिलकुल शरीर के तापमान के बराबर ही होता है। इनक्यूबेटर अंडों को लुढ़काता भी रहता है। अंडों से बच्चे निकलने में 42 दिन लगते हैं।

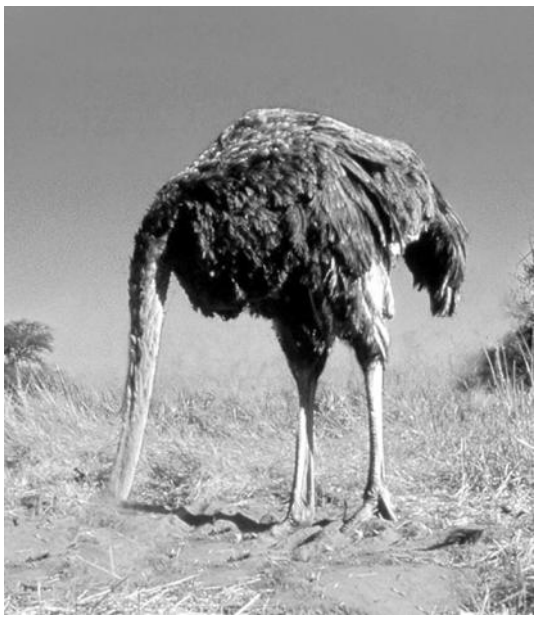

शुतुरमुर्ग के रोएंदार पंख बहुत अच्छे होते हैं। कुछ नृत्यों में लड़कियां इन्हें पहनती हैं। हर 8 महीने पर प्रत्येक शुतुरमुर्ग के पंख नोचे जाते हैं। यह प्रक्रिया सर्वथा पीड़ा रहित होती है। एक चुनाई में 100 से 200 डॉलर तक मिल जाते हैं। मेहनताना शुतुरमुर्ग की नस्ल पर निर्भर करता है। पंखों को स्कार्फ व पोशाक की सजावट के लिए इस्तेमाल किया जाता है। छोटे पक्षी और चूज़े के पंखों का इस्तेमाल डस्टर के रूप में किया जाता है। एक शुतुरमुर्ग सामान्य रूप से 15 वर्ष तक उच्च कोटि के पंख उत्पन्न करता है।

शुतुरमुर्ग के अंडे को पकाकर खाया जाता है। इसका एक अंडा मुर्गी के 2 दर्जन अंडों के बराबर व ज़्यादा पौष्टिक होता है।

शुतुरमुर्ग के पंखों और खाल से फैशनेबल वस्त्र बनाए जाते हैं। पांव की चर्बी का इस्तेमाल साबुन बनाने, खाना पकाने और छाती की तकलीफों के लिए घरेलू दवा के रूप में होता है। पेपरवेट के रूप में पैर की उंगली के 6.5 सेंटीमीटर लंबे नाखूनों की बड़ी कद्र है।

शुतुरमुर्ग का मांस भुने गोश्त के रूप में या बिल्टांग (सूखे मांस का व्यंजन) के रूप में तैयार किया जाता है। बाकी बचा मांस सासेज और पालतू पशुओं के आहार के रूप में खप जाता है। शुतुरमुर्ग का बहुत कम हिस्सा बेकार जाता है। 2 प्रतिशत से भी कम।

फैशनेबल सामग्रियां बनाने में शुतुरमुर्ग की खाल का इस्तेमाल ज़्यादा से ज़्यादा किया जाता है। कभी इसके कड़ेपन के कारण इसे सिर्फ बैग, जूते या खेलकूद के वस्त्र बनाने लायक ही समझा जाता था, लेकिन अब इस खाल को एक नई विधि से पीटा और संसाधित किया जाता है। इस प्रक्रिया के बाद इसकी खूबसूरती बढ़ जाती है और इसमें किसी अच्छे कपड़े के तमाम गुण आ जाते हैं। सुरुचिपूर्ण वस्त्रों के लिए इस आदर्श खाल में कुलीनता और टिकाऊपन दोनों हैं। प्रति वर्ष करीब 40 हज़ार खालें संसाधित की जाती हैं और 230 डॉलर प्रति खाल के हिसाब से बेची जाती हैं।

(स्रोत फीचर्स)